साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 1
January 2015

"खोज"

डॉ. चंचल भसीन

सूरज की पौ फटते ही निकल पड़ती हैं
दो आँखें
ज़िंदगी की तलाश में
चलते-चलते रास्ते में मिलती हैं
दो टाँगें, चार टाँगें, छे, आठ, दस-बेशुमार
एक-दूसरे को रौंदती
फाँदती,
आगे बढ़ती
पीछे पछाड़ती
किसी का इंतज़ार नहीं
कहाँ जा रही हैं?
इस होड़ में
आगे बढ़ने पर भी
सब मिलने पर भी
संतुष्ट नहीं
फिर भी सभी होड़ में।
दूसरी ओर सिसकती ज़िंदगी
सहारे पर पलती
आँखों में इंतज़ार
उन हाथों का
सहारे का

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 1
January 2015

किसी के आने का
निहारती
अंबर ताकती
बिलखती-तड़पती
हाथों की ढेडी लकीरों में ढूँढती
सुकून की राहें
न मिलने पर
उसे कोसती
कराहती
बेबसी दर्शाती
सब देखते
दुखी मन
फिर लौट आती शाम ढलते
एक नए कल को लिए।
(डॉ. चंचल भसीन)